वृश्चिक लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति तथा, व्यावसायिक पण्डित भी जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। एक अकेले ग्रह के भिन्न-भिन्न भावों में घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगों की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक में देख पायेंगे। लग्न बारह होते हैं, ग्रह नौ होते हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में निर्मित होती हैं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनती हैं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है- **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस

पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारहे लग्नों में कुल 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेंगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है। इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा-सा उदाहरण हम '**गजकेसरी योग**', '**बुधादित्य योग**' अथवा '**चंद्रमंगल लक्ष्मी योग**' का ले सकते हैं। क्या बृहस्पति+चंद्र की युति से बना '**गजकेसरी योग**' सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! '**गजकेसरी योग**' का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? '**गजकेसरी योग**' की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेंगी। अकेला '**गजकेसरी योग**' 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। '**गजकेसरी योग**' की सर्वोत्तम स्थिति '**मीनलग्न**' या '**कर्कलग्न**' के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति '**तुलालग्न**', '**मकर लग्न**' या '**कुम्भलग्न**' में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में '**गजकेसरी योग**' छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से जातक का गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'**मेषलग्न**', '**कर्कलग्न**', '**वृषलग्न**', '**तुलालग्न**', '**मिथुनलग्न**', '**कन्यालग्न**', '**सिंहलग्न**', '**धनुलग्न**', '**मीनलग्न**', की पुस्तके प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ है। अब यह '**वृश्चिकलग्न**' की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। वृश्चिकलग्न में कलियुगी अवतार बाबा रामदेव, श्री सत्य साईं बाबा, पोप जॉन पॉल, जान मिल्टन, राजगोपालाचार्य, ग्लावियर महाराजा माधवराज सिंधिया,

गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, लाल बहादुर शास्त्री, श्री पाण्डुरंगशास्त्री, श्री अरुण शौरी, राजनेता शरद् पवार, प्रधानमंत्री अय्यूब खां, उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत, हेनरी फोर्ड, इमरान खान, नेपोलियन बोनापार्ट, शेख हुसैन बाजेद, अभिनेता धर्मेन्द्र, जैना युवाचार्य नथमलजी जैसे व्यक्ति इस लग्न में हुए। वृश्चिकलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। वृश्चिकलग्न की स्त्री जातकों पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

एक और बड़ा फायदा जो इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों को प्राप्त होगा वह यह है कि संधिगत लग्न में प्रायः दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है। कई बार एक जातक की दो-तीन प्रकार की कुण्डलियों में भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्रायः भिन्न-भिन्न ज्योतिषयों के पास जाता है और भिन्न-भिन्न बातों से फलादेश से व्यक्ति पूर्णतः भ्रमित हो जाता है। ऐसे में यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग-अलग भावों की ग्रह स्थिति-जन्म कसौटी पर कस कर देखें। आपको स्वतः ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन-सा है? यदि आपको इस प्रकार के संकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो

अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

इन दिनों भारत और विदेशों में ज्योतिष सम्मेलन भी बहुत हो रहे हैं वर्ष भर के शनि, रविवार में शायद ही कोई वार खाली हो, जिस दिन भारत में कहीं-न-कहीं सम्मेलन न होता हो। ज्ञान-विज्ञान की चर्चा कम परन्तु परस्पर एक-दूसरे का सम्मान व उपाधि-पत्रों का वितरण ही सम्मेलन का आकर्षण बिन्दु रह गया है। इसमें ज्योतिष शास्त्र का उन्नयन नहीं हो रहा है तथा न ही आम जिज्ञासुओं को इन निरर्थक सम्मेलनों से कुछ लाभ मिल रहा है। यदि प्रत्येक लग्न पर प्रत्येक ग्रह पर, प्रत्येक योग पर प्रखर विद्वानों को सम्मान पूर्वक बुलाकर तीन-पांच दिन की विचार गोष्ठी, पत्रवाचन या व्यक्तिगत अनुभवों पर खुलकर चर्चा की जाये, उनका प्रकाशन किया जाये तो मैं समझता हूं, आम जनता को, ज्योतिष शास्त्र को इसका विलक्षण लाभ होगा। नवीन शोध आगे बढ़ेंगे जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी ऋणी रहेगी।

डॉ. भोजराज द्विवेदी
अज्ञातदर्शन बिल्डिंग, प्रथम बी. रोड, गोल बिल्डिंग के पीछे
श्रीमाली स्ट्रीट, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)-342001
दूरभाष-0291-2637359, फैक्स-0291-2431883,
मोबाइल-098280-25883

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग–सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। '**हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार**' नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे हैं। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं। यह विभाग भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में अपने ढंग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहां से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. ज्योतिष विभाग–इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था '**अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज**' के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। '**अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज**' के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुईं, समय-चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्ण रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है। डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं।

3. वास्तु विभाग–हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़-फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं।

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग–अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पंचांग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते हैं। बहुत से पत्रों में लम्बी-चौड़ी कहानियां एवं व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक लिखा होता है, जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत-सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एवं पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्रायः ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होंगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे, पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे-चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस में बैठने की जगह नहीं बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र-व्यवहार करें, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेजें।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्रायः सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक संस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है। अतः बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करें।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल-098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपको और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)—डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार-प्रसार, जात-पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके, इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

—आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ के रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं हैं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/4।
मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि सस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) बृहस्पतिकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहतें है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? ज़माना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है-

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7]

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक : सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।

ऊषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआं, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।

प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।

ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विधाएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर मनुष्य का कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है एवं जनसम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्यहीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में नेत्रविहीन की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं [redacted] नभः।
तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चित रूप ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान बृहस्पति कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप बृहस्पति के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में बृहस्पति का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या बृहस्पतिमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से भी नहीं रोकता, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
तथा वेदानधीतोऽपिज्योतिशास्त्रं बिना द्विजाः।।–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् बृहस्पतिः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि बृहस्पति रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

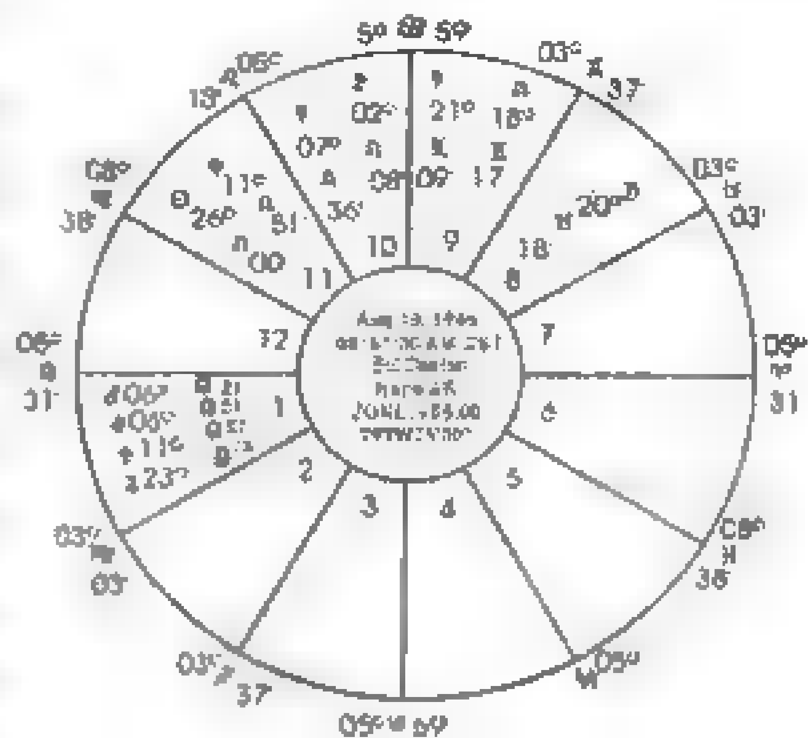
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे बृहस्पति की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न*** ।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**।
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक ''समय'' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि ''लग्न'' का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।



लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह



3.30 से 5.30 A.M.
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
7.30 से 9.30
3.30 से 11.30
9.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
7.30 से 3.30
1.30 से 3.30
3.30 से 5.30
7.30 से 3.30 P.M.

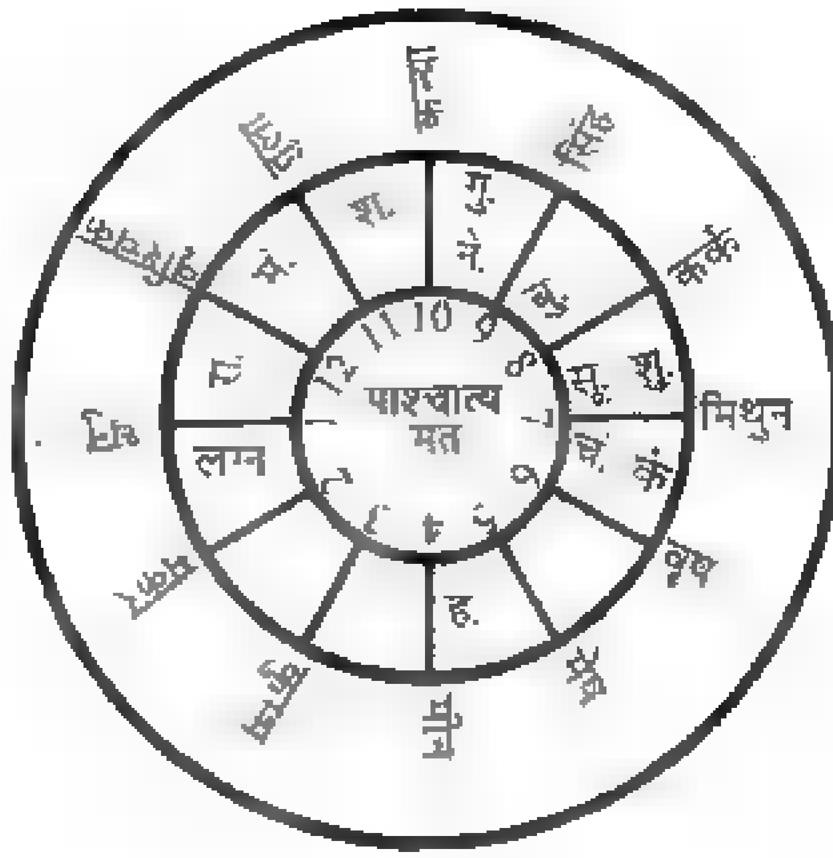
का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

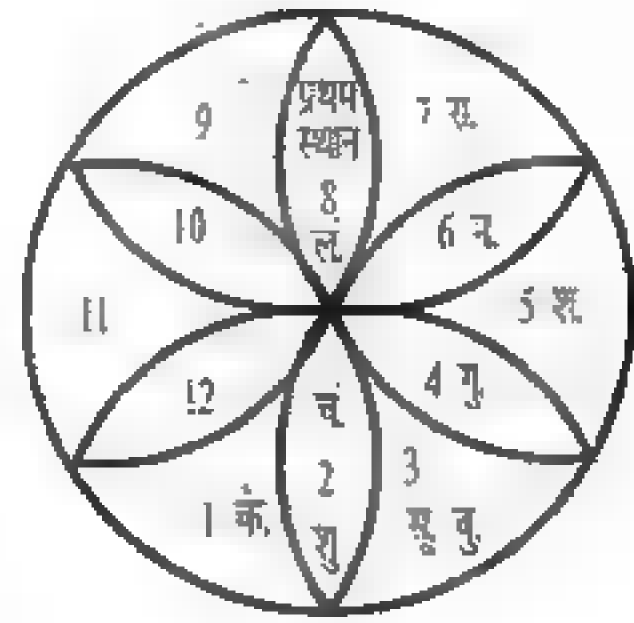
9 10 8 प्रथम स्थान लग्न 7 6 रा. 11 5
12 के. 2 सु. सू. 4 श. 1 चं. शु. 3 गु.

बुध च.शु. मिथुन सु. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन कुम्भ
कर्क. गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि कन्या मं.	तुला राहु	धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

10 9 प्रथम स्थान के. 8 7 रा. 6
11 बंगाल 5
12 के. चं. 1 शु. 2 सू. बु. 3 गु. 4 श.





क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुंभ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।

1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगांनि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्पादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

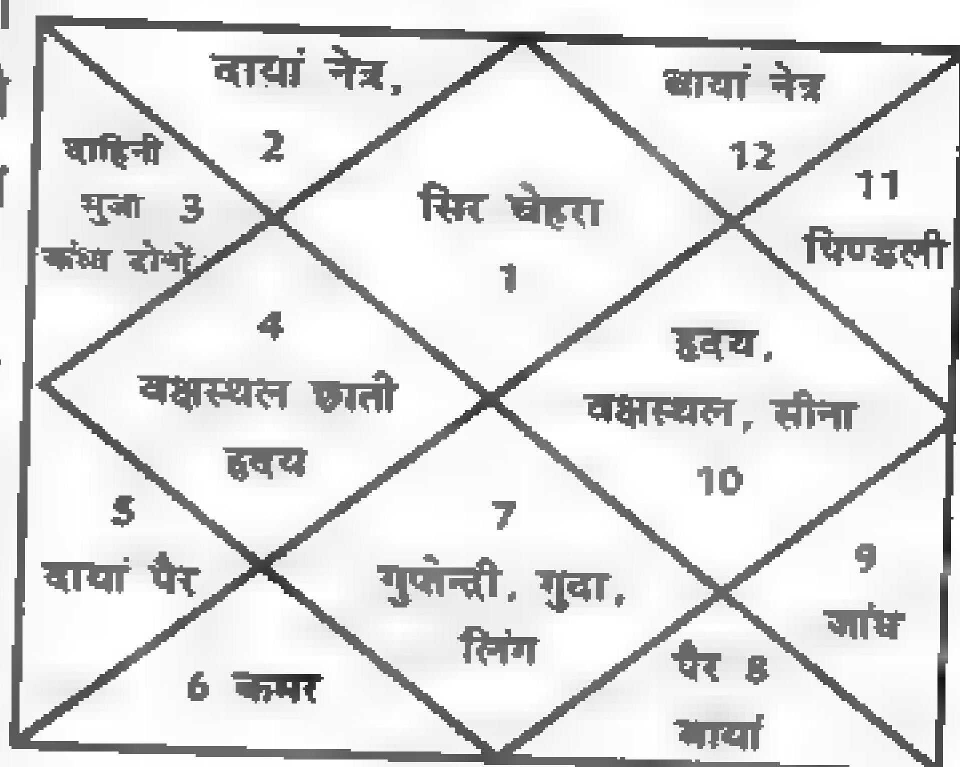
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

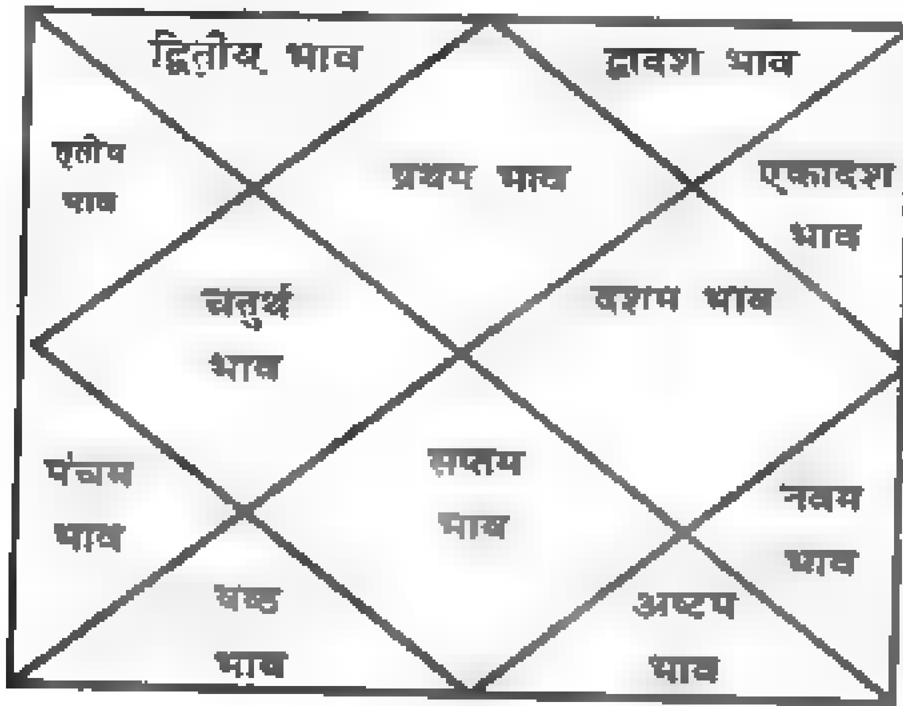
जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया हैं।

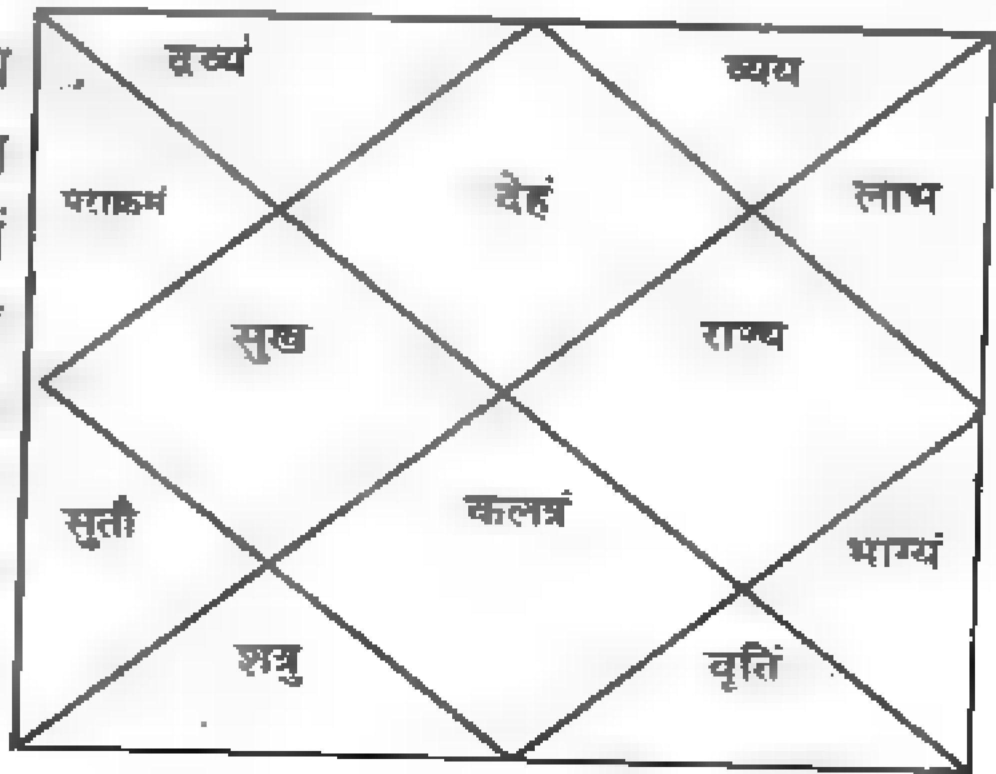


जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर



फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है—



देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययौ लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पावनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।

विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

लग्नवाराही

आचार्य वराहमिहिर ने जन्मलग्न में ग्रहों की स्थिति पर कुछ फलादेश संकेत रूप में चिह्नित किये हैं। प्रबुद्ध पाठाकों को इन बिन्दुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। अतः मूल संस्कृत श्लोकों सहित 'लग्न पुरुषकुण्डल्याम् वाराही' यहां प्रस्तुत की जा रही है।।

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेदुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः।।1।।

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सद विशतु नो मनसेप्सितं यत्।।1।।

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मंगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दु;ख और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः।।2।।

सूर्य, शनि और मंगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान मे हों तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र दूसरे भाव में हों तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।।2।।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।
सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रिय बृहस्पतिकवी रविजस्तृतीये॥3॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो यशस्वी होता है और मंगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एवं शनि यदि लग्न में तीसरे भाव में हों तो अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है।।3।।

चतुर्थभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्॥4॥

जन्म लग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ तथा धन की वृद्धि होती है।।4।।

पंचमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवबृहस्पतिवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम॥।5॥

जिसके लग्न में पंचम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाववाला पुत्र होता है, शुक्र, चंद्रमा और बृहस्पति हो तो सुंदर एवं बुद्धिमान बहुत पुत्र होते हैं।।5।।

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।

शुक्रोबुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चंद्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्॥6॥

जन्म लग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मंगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश, शनि हो तो राजमान्य और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा बृहस्पति हो तो रोगी और चंद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव वह सदा ही विकल रहता है॥6॥

सप्तमभावफलम्—

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्॥7॥

यदि जन्मलग्न में सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोड़ी संतान वाली होती है, और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो उसकी स्त्री बहुत संतान वाली तथा अत्यंत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है॥7॥

अष्टमभावफलम्—

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्धया विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥8॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्म लग्न के आठवें भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग में शस्त्राभिघात होता है और बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है॥8॥

नवमभावफलम्—

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चंद्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्॥9॥

रवि, शनि और मंगल जन्म लग्न से नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति यदि नवम स्थान में हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप से धर्मकार्य में लीनरहती है॥9॥

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।
चंद्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य, मंगल और शनि, यदि दशम भाव में हों तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है, चंद्रमा हो तो कीर्तिशाली, शुक्र हो तो बहुत पुत्र वाला तथा बुध और बृहस्पति हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है।॥10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः।
सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति सधनं रविजः सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मंगल हो तो स्त्रीसुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं।॥11॥

द्वादशभावफलम्–

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
कारणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चंद्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चंद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, बृहस्पति हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है।॥12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।

शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-

मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः॥1॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न में सूर्य या मंगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा, शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, बृहस्पति में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है॥1॥

द्वितीयभावफलम्-

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः

दारिद्रयदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये।

वित्तेश्वरीमविधवां बृहस्पतिशुक्रसौम्या

नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः॥2॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हो तो वह स्त्री दुःख दारिद्रय से युक्त और बृहस्पति, शुक्र, बुध हों तो धनवती तथा भाग्यवती और चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है॥2॥

तृतीयभावफलम्-

शुक्रेन्दुभौमबृहस्पतिसूर्यबुधास्तृतीये

कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ।

कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां

पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः॥3॥

जिस स्त्री के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम, सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है॥3॥

चतुर्थभावफलम्-

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे

सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः।

राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं

दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्॥4॥

जिस स्त्री के मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो व अल्प दुग्ध देने वाली, चंद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन, भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्–

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चंद्रात्मजो बहुसुतां बृहस्पतिभार्गवौ च।
राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्क॥5॥

स्त्री के पंचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, बृहस्पति, शुक्र हों तो पुत्र–पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चंद्रमा से बहुत कन्याएं होती हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्–

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवाः
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्या शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा॥6॥

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, बृहस्पति और मंगल इन ग्रहों में से कोई हो तो सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है॥6॥

सप्तमभावफलम्–

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधिं विदेशगमनं च यथाक्रमेण॥7॥

स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शनि, चंद्रमा, शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धननाश, रोग, विदेश–गमन ये फल देते हैं॥7॥

अष्टमभावफलम्–

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः।
सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च॥8॥

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान में बृहस्पति और बुध हों तो पति से वियोग,

चंद्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो बहुत संतान वाली तथा पति-प्रिया होती है।।8।।

नवमभावफलम्–

चंद्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः।।9।।

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, बृहस्पति इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोगी तथा शनि से विधवा और चंद्रमा से बहुत संतान वाली होती है।।9।।

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चंद्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः।।10।।

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मंगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धनरहिता तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्म लग्न से दशम भाव में हों तो धनवती तथा सौभाग्यवती होती है।।10।।

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां
पुत्रीमतीं च महितोऽर्थवतीं हि चंद्रः।
आयुष्मतीं सुरबृहस्पतिश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्।।11।।

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चंद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में बृहस्पति अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शक्र हो तो धनवती होती है।।11।।

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुहं विधवां दिनकृद् दरिद्रां
चंद्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।

साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां

प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से द्वादश स्थान में बृहस्पति हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्रा, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हों तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त, पति में प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है॥12॥

अन्ययोगा:

लग्ने शौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।

कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्॥1॥

लग्न में शनि और चंद्रमा हों, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है॥1॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।

तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः॥2॥

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो जातक का भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है॥2॥

कर्मस्थाने. निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।

भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः॥3॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हो और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में उसका धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है॥3॥

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।

सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः॥4॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हों और दूसरे भाव में शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है॥4॥

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।

अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति॥5॥

जिसके षष्ठ भाव मे चंद्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो उसका स्त्री नहीं जीती है॥5॥

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।

कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति॥6॥

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है।।6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी।
सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः।।7।।

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र या चंद्रमा हो उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राज्यमान्य होता है।।7।।

कुंभे शौरिर्धने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमाः।
मकरे च यदा शुक्रः [redacted] भुङ्क्ते पैतृकं धनम्।।8।।

कुंभ में शनि, धन भाव में सूर्य, मेष में चंद्रमा और मकर में शुक्र हो तो पिता के धन का भोग करने वाला होता है।।8।।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्र बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति।।9।।

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मंगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।।9।।

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुच्चगतैर्नृपः।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः।।10।।

जन्म समय में 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मंत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा, 3 ग्रह नीच के हों तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है।।10।।

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः।।11।।

जिसके लग्न में शुक्र-बुध और केन्द्र स्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है।।11।।

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धनः।।12।।

लग्न में बृहस्पति, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है।

क्रूराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।
दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्करः।।13।।

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है।।13।।

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरियदा भवेत्।

राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति।।14।।

लग्न में बृहस्पति, धनभाव में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हो तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है।।14।।

सप्तमे भवने चंद्रो स्वी? राहुश्च मङ्गलः।

सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः।।15।।

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चंद्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हों तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है।।15।।

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।

तीव्रपीड़ा भवेत्तस्यं स्वस्थाने नैव तिष्ठति।।16।।

जन्मकाल में उच्च राशि का मंगल सूर्य और राहु के साथ हो तो शरीर में बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है।।16।।

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।

सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति।।17।।

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6/8/12) में हों और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है।।17।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।

यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे।।18।।

यदि बृहस्पति, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक दीर्घायु और पद-पद में धन संपत्ति देने वाला होता है।।18।।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार

वृश्चिकलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

सौम्यभौमासिताः पापाः शुभौ गुरु-निशाकरौ।
सूर्याचंद्रमसावेव भवेतां योगकारकौ।।36।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयः।
तत्वफलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः।।37।।

दूसरा पाठ

बुधशुक्रार्कतनयाः पापाः सुरगुरु शुभः।
सूर्याचंद्रमसावेद भवेतां योगकारकौ।।38।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयाः।
तत्तफलानि, विज्ञानन्येवं वृश्चिकजन्मनः।।39।।

तीसरा पाठ

सौम्यभौमसिताः पापाः शुभौ रवि-निशाकरौ।
सूर्याचंद्रमसावेव भवेतां योगकारकौ।।40।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयाः।
तत्तफलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः।।41।।

चौथा पाठ

बुधशुक्रार्कतनयाः पापाः सुरबृहस्पति शुभः।
सूर्याचंद्रसावेव भवेतां योगकारकौ।।42।।

जीवो न हन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकह्वयाः।
तत्फलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिक जन्मनः॥43॥

पहला पाठ—बुध अष्टमेश और एकादशेश होता है। इसलिए, मंगल लग्नेश और षष्टेश है। इसलिए, शनि तृतीयेश और चतुर्थेश होता है। इसलिए, तीनों ही ग्रह त्रिषडायेश होते हैं इसलिए, अशुभ फल देते हैं। बृहस्पति धनेश एवं मारक स्थान का स्वामी होता है फिर भी पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होता है इसलिए अशुभफल देता है। रवि दशमेश और चंद्रमा नवमेश होता है इसलिए इनकी युति होने से राजयोग उत्पन्न करता है। बृहस्पति और शुक्र ये मारक स्थानों के अधिपति हैं परन्तु इनका यदि बुधादि पाप ग्रहों से संबंध (योग) हो तो वे मनुष्य के लिए मारक बनते हैं। इस प्रकार वृश्चिकलग्न के लिये शुभाशुभ ग्रह कहे हैं।

दूसरा पाठ—प्रथम पाठ के समान ही अशुभ फल बुध और शनि को कहकर उनमें मंगल की जगह शुक्र लिया गया है कारण वह व्ययेश और सप्तमेश होता है। इसलिए अशुभ फल देता है। प्रथम पाठ में बृहस्पति चंद्र इनको शुभ कहा है तो इस पाठ में चंद्रमा को उड़ा दिया है। शेष सब प्रथम पाठ के अनुसार है।

तीसरा पाठ—प्रथम पाठ के अनुसार अशुभ ग्रह लिए हैं परन्तु शुभ ग्रहों में बृहस्पति को उड़ा दिया गया है और रवि को लिया है। तीनों पाठों में रवि चंद्र का ही राजयोग कहा है। बृहस्पति स्वयं मारक नहीं बनता ऐसा दूसरे और तीसरे पाठ में कहा है।

चौथा पाठ—वृश्चिकलग्न के लिए बुध, शुक्र और शनि अशुभ फल देते हैं। बृहस्पति शुभ फल देता है। रवि चंद्र का योग राजकारक योग होता है। मंगल स्वयं मारक नहीं होता। बुध आदि करके अशुभ ग्रह मारक होते हैं। वृश्चिकलग्न के लिए ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभफल समझना चाहिए।

स्पष्टीकरण—वृश्चिकलग्न के लिए बुध नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर भी यहां पर अष्टम और एकादश स्थानों का स्वामी होने से पाप ग्रह के समान माना गया है। कारण वह शुभ फल देने वाला होता है। मंगल और शनि ये स्वाभाविक तौर पर पाप ग्रह हैं। फिर भी यहां पर मंगल लग्नेश और षष्टेश होने से अशुभ है और शनि चतुर्थेश होने से शुभ है। लेकिन तृतीयेश होने के कारण से अशुभ हुआ। इस प्रकार बुध, मंगल और शनि ये तीनों त्रिषडायपति हैं। रवि चंद्र का योग नवमेश (त्रिकोण) और दशमेश (केन्द्र) का होने से राजयोग कहा है और यह श्रेष्ठ योग है। पहले पाठ में बृहस्पति चंद्र का योग राजयोगकारक कहा है उसका कारण बृहस्पति धनेश होने से अशुभ परन्तु पंचमेश (त्रिकोणेश) होने से शुभ माना है और उसका चंद्रमा से (नवमेश) यानि दो त्रिकोणपति का योग होता है इसलिए राजयोग कहा है परन्तु

यह योग रवि चंद्र के योग की अपेक्षा कम श्रेणी का राजयोग होता है। यहां पर एक जगह तो बृहस्पति को शुभ कह कर तुरन्त ही ''जीवोनिहन्ता'' ऐसा कहा है अर्थात् बृहस्पति मनुष्य का विनाश करता है ऐसा कहा है। इस पर से ऐसा मालमू पड़ता है कि शुरू त्रिकोणेश होने से उसे शुभत्व-प्रदान कर दिया, वह धनेश हैं याने मारकेश है इसलिए उसे विनाशकर्त्ता माना गया है। यह भी स्वाभाविक ही है। परन्तु विचार करते ऐसा दिखाई पड़ता है कि बृहस्पति और शुक्र ये दोनों मारक स्थानों के अधिपति होकर भी उनका यदि बुधादि ग्रहों से योग हो तो वे मारकेश के समान अशुभ फल देते हैं ऐसा भी कहा है। ऐसा योग नहीं होता हो तो इसका अर्थ तो ऐसा हुआ कि बृहस्पति और शुक्र मारक नहीं बनेंगे। बुधादि अशुभ ग्रह जो कहे गये हैं उनकी दशान्तर्दशा में अनिष्ट फल मिलेगा और मनुष्य के सौख्य का विनाश होगा यह स्पष्ट है। लेखक के मत में वृश्चिकलग्न को शनि की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अथवा शुक्र की अंतर्दशा मारक होगी।

वृश्चिकलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–बृहस्पति पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
2. **शुभ योग**–चंद्रमा नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–बुध दशम (केन्द) का स्वामी होने से शुभ और सूर्य नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से इन दोनों का सहस्थानपतित्व योग उत्तम होकर शुभ फलदायक होता है।
4. **शुभयोग**–सूर्य दशम (केन्द्र) का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार शुभ फलदायक है। (पाठान्तर के अनुसार)

वृश्चिकलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–बुध अष्टम और एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ और अशुभ फलदायक है।
2. **अशुभ योग**–मंगल स्वाभाविकतः पाप ग्रह है और षष्ट स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है (और निर्बल लग्न केन्द्र का स्वामी होने से निर्बली है) और अशुभ फलदायक है।
3. **अशुभ योग**–शनि स्वयं स्वाभाविक पाप ग्रह है और वह चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होकर तृतीय स्थान का अधिपति होने से अशुभ है और श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फलदायक है।

4. **अशुभ योग**–बृहस्पति शुभ योगकारक जो भी माना गया है फिर वह मारक (द्वितीय) स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला है।

5. **अशुभ योग**–शुक्र (सप्तम) मारक स्थान का स्वामी होकर केन्द्राधिपति होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ और अशुभ फलदायक हैं।

वृश्चिकलग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र (दोनों ग्रह दूषित होते हैं।)

वृश्चिकलग्न के लिए सफल योग

1. चंद्र+मंगल (सदोष), 2. चंद्र+शनि (सदोष), 3. चंद्र+सूर्य, 4. चंद्र+शुक्र (सदोष)।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– वृश्चिक
2.	लग्न चिह्न	– बिच्छु
3.	लग्न स्वामी	– मंगल
4.	लग्न तत्त्व	– जल तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	– स्थिर
6.	लग्न दिशा	– उत्तर
7.	लग्न लिंग व गुण	– स्त्री
8.	लग्न जाति	– ब्राह्मण
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– सौम्य स्वभाव, कफ प्रकृति
10.	लग्न का अंग	– पीठ (गुदा)
11.	जीवन रत्न	– मूंगा
12.	अनुकूल रंग	– लाल
13.	शुभ दिवस	– मंगलवार
14.	अनुकूल देवता	– शिवजी, भैरव, हनुमान
15.	व्रत, उपवास	– मंगलवार
16.	अनुकूल अंक	– 9
17.	अनुकूल तारीखें	– 9/18/27
18.	जातक भोजन रुचि	– तिक्त, खट्टा-चटपटा
19.	मित्र लग्न	– कर्क, मीन
20.	शत्रु लग्न	– मेष, सिंह व धनु

21.	**व्यक्तित्व**	– कानूनबाज, गणक, सन्त, समीक्षक
22.	**सकारात्मक तथ्य**	– बुद्धिमान, निडर, प्रकृति प्रेमी
23.	**नकारात्मक तथ्य**	– ईर्ष्यालु प्रवृत्ति

❑❑❑

वृश्चिकलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, षष्ठेश	–	मंगल
2.	धनेश, पंचमेश	–	बृहस्पति
3.	पराक्रमेश, सुखेश	–	शनि
4.	सप्तमेश, खर्चेश	–	शुक्र
5.	अष्टमेश, लाभेश	–	बुध
6.	भाग्येश	–	चंद्रमा
7.	राज्येश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-बृहस्पति, 9-चंद्रमा
9.	दुःस्थान के स्वामी	–	6-मंगल, 8-बुध, 12-शुक्र
10.	केन्द्राधिपति	–	1-मंगल, 4- शनि, 7- शुक्र, 10-सूर्य
11.	पणकर के स्वामी	–	2- 5-बृहस्पति, 8, 11-बुध
12.	आपोक्लिम	–	3-शनि, 6-मंगल, 9-चंद्र, 12-शुक्र
13	त्रिकेश	–	6-मंगल, 8-बुध, 12-शुक्र
14.	उपचय के स्वामी	–	3-शनि, 6-मंगल, 10-सूर्य, 11-बुध
15.	शुभ योग	–	1. बृहस्पति, 2. चंद्र
16.	अशुभ योग	–	1. मंगल+बुध, 2. मंगल+शनि, 3. मंगल+शुक्र
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+मंगल, 2. चंद्र+शनि, 3. चंद्र+सूर्य, 4. चंद्र+शुक्र

19. **राजयोग कारक** – सूर्य, चंद्र, बृहस्पति

20. **मारकेश** – शुक्र

21. **पापफलद** – शुक्र, बुध, शनि, परमपापी–बुध

विशेष–वृश्चिकलग्न वालों के लिये मंगल लग्नेश होते हुए भी पापी है। यदि मंगल स्वगृही हो तो कारक होगा।



वृश्चिकलग्न के स्वामी मंगल का वैदिक स्वरूप

चारों वेदों में मंगल या भौम से सम्बन्धित कोई सूक्त नहीं मिलता। 'पृथ्वीसूक्त' एवं पृथ्वी के बारे में रहस्यमय जानकारियों से परिपूर्ण अनेक मंत्र ऋग्वेद में हैं परन्तु इनके साथ मंगल ग्रह का कोई तारतम्य नहीं बैठता। वेदों में मंगल ग्रह की आराधना-पूजा व प्रतिष्ठा हेतु एक मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है।

मंगल का वैदिक मंत्र

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपा ꣳ रेता ꣳ सिजिन्वति॥
ॐ भौमाय नमः

—यजुर्वेद अ.3/मं. 12

जिसका शब्दिक अर्थ इस प्रकार है–"यह अग्नि द्युलोक के शिर के समान महान है और समस्त पृथ्वीलोक इस अग्नि के तेज से महान है। यही अग्नि जलों में सार (तेज) रूप से (दृष्टि उत्पादन निमित्त) विद्यमान है।"

सम्भवतः ऋषियों ने द्यौलोक (अन्तरिक्ष) में ऐसा ज्वलनशील पिण्ड देखा हो, जिसमें जल-जीव व सृष्टि की सम्भावना हो तथा पृथ्वी से जिसका गहरा सम्बन्ध हो और उसे मंगल या भूमिपुत्र 'भौम' कह दिया हो। इस मंत्र के शब्दार्थ में तो कहीं नहीं, परन्तु गूढ़ार्थ व समाधि भाषा में ऐसा भाव झलकता है। इस मंत्र के पीछे ॐ भौमाय नमः जोड़ दिया गया है। जिसका अर्थ है मंगल के ऐसे दिव्य रूप को नमस्कार है। कर्मकाण्ड (पूजा-पाठ) में अनादिकाल से मंगल के पूजन हेतु इसी मंत्र का प्रयोग होता है। मंगल के बारे में इससे अधिक जानकारी वेदों में नहीं है पर पौराणिक काल में मंगल का दिव्य रूप धीरे-धीरे स्पष्टतः मुखरित होता चला गया।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न के स्वामी मंगल का पौराणिक स्वरूप

उत्पत्ति कथा–वाराहकल्प की बात है। भगवान वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसको अपनी कक्षा में स्थापित कर दिया था। पृथ्वी देवी की उद्विग्नता मिट गई थी और वे स्वस्थ हो गईं थीं। उनकी इच्छा भगवान को पति के रूप में पाने की हो गई। उस समय वाराह भगवान का तेज करोड़ों सूर्य के सदृश्य असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना की पूर्ति के लिए भगवान वाराह अपने मनोरम रूप में आ गए और पृथ्वी देवी के साथ वे दिव्य वर्ष तक एकान्त में रहे। इसके बाद वाराह-रूप में आकर पृथ्वी देवी का पूजन किया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/29–33)। उस समय पृथ्वी देवी गर्भवती हो चुकी थीं, उन्होंने मंगल नामक ग्रह को जन्म दिया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/43)। विभिन्न कल्पों में मंगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाएं हैं। आजकल पूजा के प्रयोग में इन्हें भारद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेश पुराण में आती है।

मंगल ग्रह के पूजन की बड़ी महिमा है। भौमव्रत में ताम्रपत्र पर भौम-यंत्र लिखकर मंगल की सुवर्णमय प्रतिमा प्रतिष्ठित कर पूजा करने का विधान है (भविष्य पुराण)। जिस मंगलवार को स्वाति नक्षत्र मिले, उसमें भौमवार-व्रत करने का विधान है। मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। (पद्म पुराण)। अंगारक-व्रत की विधि मत्स्य पुराण के बहत्तरवें अध्याय में लिखी गई है। मंगल अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्र गति से चले तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं (श्रीमद्भा. 5/22/14)।

वर्ण–मंगल ग्रह का वर्ण लाल होता है और इनके रोम भी लाल हैं। (मत्स्य पु. 94/3)।

वाहन–मंगल देवता का रथ सुवर्ण-निर्मित है। लाल रंग वाले घोड़े इस रथ में जुते रहते हैं। रथ पर अग्नि से उत्पन्न ध्वज लहराती रहती है। इस रथ पर बैठकर

मंगल देवता कभी सीधी, कभी वक्र गति से विचरण करते हैं। (मत्स्य पु. 127/4-5)। कहीं-कहीं इनका वाहन मेष (भेड़ा) बताया गया है (श्रीतत्त्वनिधि)।

मंगल देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए-

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥

(मत्स्य पु. 94/3)

'भूमिपुत्र मंगल देवता चतुर्भुज हैं। इनके शरीर के रोएं लाल हैं। इनके हाथों में क्रम से शक्ति, त्रिशूल, गदा और वरदमुद्रा है। उन्होंने लाल मालाएं और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं।'

मंगल के अधिदेवता स्कन्ध, प्रत्याधिदेवता पृथ्वी है।

मंगल की उत्पत्ति-पृथ्वी के पिता सूर्य और उसकी माता चंद्र है। मंगल पृथ्वी का पुत्र है। सूर्य और चंद्र इसके नाना नानी हैं। ननिहाल के पूर्ण गुण भी इसमें हैं और पृथ्वी से संघर्ष कर यह उससे अलग हुआ है। अतः इसमें मारकत्व भी है। सूर्य का तेजस्व और चंद्र की शीतलता इसमें है। यह प्रबल साहसी है। शक्ति का नेतृत्व इसका प्रतीक है। उज्जैन में इसकी उत्पत्ति मानी गई है। यह चतुर्भुज रूप है। शूल, गदा ये इसके शस्त्र हैं। यह भारद्वाज कुलीन क्षत्रिय है। मेष इसका वाहन है। इसका देवता कार्तिक स्वामी है, अग्नि तत्त्व है वर्षा में चमकती बिजली के समान इसकी कांति है।

रंग-मंगल शत्रुओं का विजेता, युद्ध प्रिय, ऋणकर्त्ता, ऋणहर्ता दोनों के रूप में प्रसिद्ध है। यह रक्त का प्रतीक होने से लाल रंग का है। वैद्यनाथ ने इसे "संरक्तः गौरः कुजः" से लाल और सफेद के मिश्रण का रंग बताया है। वराह मिहिर ने इसे किंशुक के फूलों जैसा लाल बताया है। तपे हुए तांबे के समान इसकी कांति दर्शाई है। विदेशी विद्वानों ने इसे अग्नि ज्वाला सम वर्ण बताया है।

बलवत्ता-इसका कद नाटा है। यह मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मेष इसकी मूल त्रिकोण राशि है। मकर में यह उच्च का होता है और कन्या में नीच का बनता है। नवांश व द्रेष्काण में स्वगृही होकर बली होता है। मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मेष राशि के प्रारम्भ में बली होता है। मीन और कर्क में सुखप्रद होता है। नैसर्गिक कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश बनकर जन्म व मृत्यु पर यह अधिकार रखता है। यह रात्रिबली, कृष्ण पक्ष में बली व दक्षिण दिशा में बली होता है। अपनी होरा अपने मास, पर्व और काल में बली होता है। ग्रीष्म ऋतु तथा चतुर्थ स्थान में इसका बल कमजोर रहता है। दशम स्थान में यह दिग्बली होता है। षष्ठ में हर्षबली

होता है। यह तीसरे व षष्ठ भाव का कारक है, वहां भाव का नाश करता है। वह पुरुष ग्रह है, अतः स्त्री राशियों में ज्यादा सुखदायी रहता है। वक्री होने पर शुभ फल प्रदान करता है।

कार्य और धंधे–मंगल में शारीरिक व मानसिक कार्य का सामर्थ्य होता है। इसका प्रधान गुण है दूसरों के लिए खुद को भी कष्ट में डालना। थोड़े से इशारे से ये बात को फौरन समझ जाना, तर्क की प्रबल शक्ति का विकास इनमें होता है–इसलिए राजनेता, वकील, बिजली के कार्य, वैज्ञानिक, मिस्त्री, व्यापारी, मशीनरी के कार्य, इंजीनियर, ओवरसिअर, भूस्वामी, जागीरदार, सुनार, दर्जी, लुहार, चमार, रसोईया, औषधि विक्रेता, चोर, डकैत, स्मगलर, नायक, सेनापति, सिपाही इन धंधों में मंगल की प्रधानता पाई जाती है।

धातु–सोना व तांबा है। रत्न मूंगा (प्रवाल) है। 5 से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनने से यह फलता है।

दृष्टि–इसकी उर्ध्व दृष्टि है। 4, 7, 8वीं सम्पूर्ण दृष्टियां हैं, 3, 10 एकपाद, 5, 9 द्विपाद दृष्टियां हैं।

यह दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि का प्रभाव रखता है। केवल अपने घर को देखकर बुरा प्रभाव नहीं करता है, पर इसकी सप्तम दृष्टि प्रायः शत्रुता रखती है।

मित्रादि–मंगल के मित्र ग्रहों में सूर्य, बृहस्पति, चंद्र हैं। बुध और राहु शत्रु है। शुक्र, शनि सम होते हैं। राहु की शत्रुता समता भाव पर निर्धारित है।

स्वरूप–जिन व्यक्तियों की मेष या वृश्चिक राशि होती है, या जिनके लग्न उपरोक्त होते हैं। वे प्रायः बिना सोचे समझे सामने वाले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। वे बहुत उतावले व त्वरित परिणाम चाहने वाले होते हैं। ये लोग तेजस्वी व दबंग होते हैं तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। अपनी प्रतिभा से ऊंचे उठते हैं। क्रोधी व साहसी होते हैं।

उनका चेहरा ललाई लिए हुए कुछ गोरे रंग का या गेहुंआ होगा। मध्यम औसत कद, गर्दन लम्बी, बाल कुछ घुंघुराले, नेत्रों में तीखापन, चेहरा कुछ लम्बा, आंखें गोल, दांत सुंदर, जातक के चेहरे के किसी भाग में चोट या मस्सा या लहसुन का निशान होगा, घुटने कमजोर होंगे। ललाट चौड़ा भी हो व बालों में हल घुंघरालापन रहेगा। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। व्यक्ति स्वतंत्र विचार वाला होगा।

अचूक फल

- मंगल 12, 1 4, 7, 9 भावों में स्थित हो तो कुण्डली मांगलिक होती है। कुछ अन्य ज्योतिषियों के आधुनिक शोध ने दूसरे स्थान के मंगल से कुण्डली को

मांगलिक माना है। मांगलिक कुण्डली स्त्री व पुरुषों के लिए पारिवारिक रूप से कष्टदाई बनती है। पाप ग्रहों की इन स्थानों में स्थिति से मांगलिक तुल्य बनती है। शुक्र से 4थे व 8वें मंगल भी कष्टदायी बनते हैं। गृहस्थ ठीक से नहीं चलता।

- ❑ केन्द्र में स्वगृही व उच्च राशि में स्थित मंगल से रूचक महायोग बनता है। जो साहस व शौर्य से धन, भूमि व वैभव का स्वामी बनाता है।
- ❑ मंगल+शनि के संबंध से बिजली, विज्ञान व दो नंबर के धंधे बनते हैं। मंगल में शनि व शनि में मंगल की दशा बीमारी या कष्ट देती है।
- ❑ तीसरा मंगल छोटे भाई को देने वाला व उसका मारक भी होता है।
- ❑ पंचम व एकादश भवन के मंगल पुत्र कारक और मारक भी होते हैं।
- ❑ दूसरे स्थान में स्थित मंगल पुत्र को अग्नि सम्बन्ध या एक्सीडेण्ट से हानि देते हैं।
- ❑ 6, 7, 12वें स्थान मे स्थित मंगल शत्रु और रोग की वृद्धि करता है।
- ❑ मंगल यदि बृहस्पति से नियंत्रित हो जाए तो शुभ फल करेगा। बृहस्पति से दृष्ट मंगल शुभ फल देने वाला होता है। परन्तु अभी शोध से मांगलिक स्थानों का मंगल बृहस्पति से दृष्ट होकर प्रबल मंगल मारक बनता है। ऐसा फल दृष्टव्य है।
- ❑ मंगल का बल शुक्र तोड़ देता है। (मं.+शु) हो उस मंगल की दृष्टि से मृत्यु नहीं होती है। यह सेक्स बढ़ाता है।
- ❑ मंगल का शुक्र से किसी प्रकार का संबंध हो तो वह संतान योग देता है।
- ❑ अष्टमस्थ या अष्टम पर दृष्टिकर्त्ता अनियंत्रित मंगल (जिस मंगल पर किसी शुभ व अशुभ ग्रह का असर न हो वह मंगल, उम्र कम करता है। अचानक एक्सीडेण्ट से मृत्यु देता है।
- ❑ सूर्य+मंगल का योग हो ले सूर्य से नियंत्रित मंगल अकस्मात् दुर्घटना देता है।
- ❑ चंद्र व शुक्र के संबंध में मंगल दूषित होता है। व्यक्ति कुमार्गगामी, क्रोधी व व्यसनी बनाता है।
- ❑ 5, 7, 12वें भाव में मंगल के लोग परनिन्दक होते हैं।
- ❑ 2, 4, 6, 8, 12वें भावों में मंगल वाले जातक डिग्रीयां प्राप्त करते हैं। परन्तु उनके मन की अवस्था अविकसित रहती है।
- ❑ शुक्र या मंगल जन्म में केन्द्र में हो तो जब जब मंगल उसी राशि पर आएगा चोट देगा।

रहता है। जब यह सूर्य से 135 डिग्री अंश की दूरी पर जाता है तो वक्री हो जाता है। उस समय इसकी चाल 65 दिन में 12 डिग्री अंश तक की हो जाती है। यह सूर्य से 17 डिग्री अंश की दूरी पर अस्त हो जाता है अस्त होने पर 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री हो जाता है। तथा वक्री के 60 दिन बाद यह मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 46/11 होती है तो यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है।



वृश्चिकलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

वृश्चिकलग्न का स्वरूप

स्वल्पांगो बहुपाद्ब्राह्मणो बिली।
सौम्यस्थो दिनवीर्याढ्यः पिशङ्गो जलभूवहः॥16॥
रोमस्वाढ्योऽतितीक्ष्णाग्रो वृश्चिकश्च कुजाधिपः।

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 16

स्वल्प शरीर, बहुपद, ब्राह्मण जाति, बिल में रहने वाला, उत्तरवासी, दिनबली, पिंगलवर्ण, जलतत्त्व, भूचारी, रोमयुक्त, तीक्ष्ण अग्रभाग वाला है, इसका स्वामी मंगल है॥16॥

पृथुलनयनवक्षा वृत्तजङ्घोरुजानु
र्जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।
नरपतिकुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो,
झषकुलिशखगांकश्छन्नपापोऽलिजातः॥8॥

—बृहज्जातकम् अ. 18/श्लो. 8

वृश्चिक राशि में चंद्रमा हो तो मनुष्य बड़ी आंखों व छाती वाला, गोल पिण्डली, जांघ व घुटनों वाला, पिता व बृहस्पति से वियुक्त, बाल्यकाल में रोगी रहने वाला, राजकुल में सम्मान पाने वाला, पिंगल वर्ण, क्रूर चेष्टाओं वाला, हाथ या पैर से मछली, वज्र या पक्षी के चिह्नों से युक्त, गुप्त रूप से पापकर्म करने वाला होता है।

जातो विलग्ने खलु वृश्चिके स्याच्चण्डोऽभिमानी पुरुषोऽतिशूरः।
विज्ञानवान् काव्यकरः कृतज्ञः स्यात् संविभागी बहुरोषचित्तः॥8॥

—वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.8/ पृ.288

यदि जन्म समय में वृश्चिकलग्न का उदय हो तो मनुष्य प्रचण्ड स्वभाव वाला, उग्र, अत्यधिक अभिमानी, अत्यधिक शूर, विशिष्ट ज्ञान–विज्ञान वाला, काव्यकर्ता,

किए गए उपकार को मानने वाला, अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाला एवं विकीर्ण भाग्य सम्पत्ति वाला होता है।

मूर्खः करविलोचनोऽतिचपलो मानी चिरायुर्धनी
विद्वान् वृश्चिकलग्नजश्च सुजनद्वेषी विवादप्रियः॥

—जातक पारिजात श्लो. 8/ पृ. 678

वृश्चिक मूर्ख (बुद्धिमान् नहीं), क्रूर नेत्र, अत्यन्त चपल, मानी गर्व सहित, दीर्घायु, धनी, विद्वान्, सज्जनों से द्वेष करने वाला, विवादप्रिय।

गौरः स्थिरः प्रचण्डो रणोत्कटः स्यान्नरो विशालाक्षः
स्थूलविशालशरीरः कलिप्रियो वृश्चिकाद्यांशे॥

—सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में वृश्चिक राशि व वृश्चिक राशि का पहिला द्रेष्काण हो तो जातक शुभ्रवर्ण, स्थिर, उग्र, संग्राम प्रेमी, विशाल नेत्र वाला, मोटा व विशाल शरीर वाला और कलह प्रेमी होता है।

वृश्चिककोदयसञ्जातः शौर्यवानतिदुष्टधीः।
विज्ञान ज्ञान सम्पन्न सुखीसुविग्रहः सुधीः॥

—मानसागरी अ. 1/ श्लो. 8

वृश्चिकलग्न वाला जीव पराक्रम शक्तिशाली, प्रपंचकर्ता, चतुर, स्वार्थी, वाद-विवाद में प्रवीण, विचारशील, वंश में प्रधान, हठवादी साथ ही ज्ञान दम्भशील रहे।

भोजसंहिता

वृश्चिकलग्न का अधिपति मंगल है। मंगल तेजोमय व अग्नितत्त्व प्रधान होता है। ऐसा जातक दबंग व क्रोध युक्त होता है। यह स्त्री सूचक राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव दम्भ, हठी, दृढ़ प्रतिज्ञ व स्पष्टवादी पुरुषों का प्रजनन है। 'विशाखा' नक्षत्र में जन्मे जातक को क्रोध बहुत ही शीघ्र आता है। कोई जरा सी भी विपरीत बात कह दे तो इनको सहन नहीं होती। ये बिना आगे-पीछे की परवाह किए अगले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। स्त्री संज्ञक राशि होने से फिर ये मन-ही-मन घबराते हैं। परन्तु अपनी घबराहट बाहर प्रकट नहीं होने देते। क्रोध में बहुत कुछ अंटशंट कह डालते हैं। तथा बाद में पछताते हैं।

यदि आपका जन्म 'अनुराधा' नक्षत्र में है तो आप साहसी व कर्मठ हैं। परिस्थितियों की मार के सामने आप झुकने वाले नहीं आप चुपचाप अबाध गति से

आगे बढ़ने वाले व्यक्तियों में से हैं। आपकी इच्छाशक्ति बड़ी दृढ़ है। तथा आपकी बुद्धि भी तीक्ष्ण है।

'वृश्चिक' राशि का चिह्न डंकदार बिच्छू है। बिच्छू के करीब 32 नेत्र शरीर के भिन्न-भिन्न अंगों पर होते हैं। सो इस राशि वाला जातक सहस्र चक्षुओं से किसी वस्तु का अवलोकन करता है। विषय की बारीकी को सहज ही पकड़कर अपने काम की वस्तु उसमें से ग्रहण कर लेता है। बिच्छु बड़ा ही तेज स्वभाव का व शीघ्र डंक मारने वाला प्राणी होता है। सदैव इस राशि वाले व्यक्ति भी फौरन कार्य करने वाले, शीघ्र बदला लेने वाले व क्रियाशील व्यक्ति होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति दूसरों की असावधानी का शीघ्र फायदा उठाने में तत्पर रहते हैं। बिच्छु के आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली होता है। विष की तीक्ष्णता उत्तरार्द्ध में है। अत: इस राशि में उत्पन्न व्यक्तियों का पूर्वार्द्ध साधारण तथा जीवन के अंतिम दिनों में ये भरे पूरे व सर्व प्रभुत्व सम्पन्न बन जाते है।।

वृश्चिकलग्न स्त्री जाति सूचक, जल तत्त्व प्रधान व रात्रि बली होती है। तदैव इस राशि वाले सज्जन रात्रि में अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। यदि आपका नाम य से प्रारंभ होता है। आपको एक बार क्रोध आ जाने पर आप क्षमा करना नहीं जानते। इनके मन में क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर धधकती रहती है। और यद्यपि बाहर से यह मालूम होता है कि आप शान्त हो गये परन्तु प्रतिहिंसा की भावना आपके अंदर और भी भयानक रूप धारण कर लेती है। आप प्रतिद्वन्दी को निर्दयता से हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हैं। इनको अगर जहरीले इंसान कह दिया जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ये शत्रु को धर दबोचने वाले, झगड़ालू व उन्मत शरीर के व्यक्ति होते हैं।

सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं बलवान होते हैं तथा परिश्रम एवं लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। विभिन्न विषयों का इनको ज्ञान रहता है तथा एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ रहते हैं तथा मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य सम्मानीय रहते हैं। आत्मशक्ति की इनमें प्रबलता रहती है तथा महत्वाकांक्षा की भी तीव्र भावना से युक्त रहते हैं। धन सग्रंह के प्रति भी ये रुचिशील रहते हैं तथा धनार्जन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इनमें भावुकता अल्प रहती है तथा बुद्धि के द्वारा ही अधिकांश कार्यों को सम्पन्न करते हैं साथ ही विज्ञान एवं गणित के क्षेत्र में ये ख्याति अर्जित करते हैं।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान पुरुष होंगे तथा सर्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्चर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक

इनका उपभोग करेंगे। आपमें निर्भयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा फलत: कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली होंगे तथा उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग यदा-कदा असुविधा की अनुभूति करेंगे। भावुकता से आप जीवन में कम ही कार्य करेंगे फलत: प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

आप एक सहनशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा धैर्यपूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करके उसमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप धैर्यपूर्वक सफलता प्राप्ति की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप नित्य आर्थिक लाभ अर्जित करेंगे तथा इनसे आपको सहयोग भी मिलता रहेगा। जिससे आपके अन्य कार्य भी यथा समय सिद्ध होंगे।

आपके स्वभाव में दया एवं उदारता का भाव भी विद्यमान होगा तथा आप अवरानुकूल अन्य जनों को सुख-दु:ख में सेवा तथा सहयोग प्रदान करेंगे। धनैश्चर्य एवं भौतिक सुखों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में आप अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय-समय पर धार्मिक कार्यकलापों या तीर्थयात्रओं को मानसिक शान्ति के लिए सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में भी आप श्रेष्ठ एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे इस प्रकार आप परिश्रमी संग्रहकर्ता एवं महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा धनैश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

बिच्छु की आयु कम होती है सो वृश्चिक राशि वाले व्यक्ति अल्पायु को प्राप्त होते देखे गये हैं। अचानक आक्रमण तथा घटनाचक्र के मोड़ से यह शीघ्र ही काबू में आ जाते हैं। इनको प्राय: तिक्त (खट्टा) स्वाद पसंद होता है तथा खाना खाते वक्त नींबू का प्रयोग ज्यादा करते हैं।

यदि आपका जन्म 14 नवम्बर से 14 दिसम्बर के बीच हुआ है तो आपको विरासत में सम्पत्ति मिलने का योग है। ऐसे जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होता है। तथा प्रथम पत्नी का सुख प्राय: कम रहता है। भाग्योदय के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मित्र बहुत होंगे, परन्तु शत्रुओं की भी कमी न रहेगी। शत्रु अकारण पैदा होंगे। आप दूसरों के हृदय की बात भांप लेते हैं। परन्तु आपके पेट की थाह पाना कठिन है। लाल व ज्वलनशील पदार्थों का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। औषधि ज्ञान व विष चिकित्सा में आप शीघ्र सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

नक्षत्रानुसार फलादेश

तो	ना नी नु ने	नो या यी यू
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः

विशाखा का चतुथ चरण, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र मिलाकर वृश्चिक राशि बनती है। विशाखा का नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। अनुराधा का नक्षत्र स्वामी शनि और ज्येष्ठा नक्षत्र स्वामी का बुध है।

विशाखा के चतुर्थ पाद—विशाखा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति लम्बी आयु वाला होता है। यहां पाद का स्वामी स्वयं चंद्र है, मानो स्वक्षेत्री चंद्र पर बृहस्पति (नक्षत्र स्वामी) का प्रभाव हो जिसके फलस्वरूप आयु का बढ़ना उपयुक्त ही है, क्योंकि चंद्र लग्न रूप होने से बलवान् होकर आयु को बढ़ाएगा।

चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र में

विदेशवासी धनवान् क्षुधालुः

चंद्रेऽनुराधास्वटनो नरः स्यात्।

चंद्रमा यदि जन्म समय में अनुराधा नक्षत्र में हो तो मनुष्य विदेश में रहने वाला, धनी, भूख से व्याकुल तथा भ्रमणशील होता है। उपर्युक्त फलादेश हम समझते हैं कि सत्य के अधिक समीप है अपेक्षाकृत उस फलादेश के कि जो जातक पारिजात ने इस विषय में दिया है। अनुराधा नक्षत्र का स्वामी शनि है जो कि चंद्रमा का शत्रु है और अशुभ भी है। शनि पृथकता और विच्छेद के लिए विख्यात है। अतः उसके नक्षत्र में लग्नरूप चंद्रमा के आ जाने से जन्म भूमि (जो कि लग्न प्रदर्शित होती है) से पृथक विदेशवास करना उपयुक्त कहा है। चंद्रमा को और अधिक अस्थिर बनाकर मनुष्य को भ्रमणशील बनाने का कार्य भी शनि के नक्षत्र के लिए उपयुक्त ही है। क्षुधालु विशेषण भी बहुत उपयुक्त है क्योंकि चंद्रमा का खाने-पीने से बहुत घनिष्ठ संबंध है और शनि हुआ कमी और अभाव का कारक है। अतः जब यह खाद्य पदार्थों की कमी करेगा तो क्षधालु होने की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

यहां हम धनी होने के गुण से सहमत नहीं हैं, क्योंकि शनि का काम कमी उत्पन्न करना है और लग्नरूप होने से चंद्रमा धन का द्योतक है। अतः धन में कमी आनी चाहिए न कि वृद्धि।

अनुराधा का प्रथम चरण—अनुराधा के प्रथम चरण में यदि जन्म समय में चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य तीव्र स्वभाव का होता है। इस पाद का स्वामी सूर्य है और

नक्षत्र का स्वामी शनि। दोनों तीव्र हैं, बल्कि शनि तो क्रूर भी है। अतः सूर्य और कुछ हद तक शनि के चंद्रमा पर प्रभाव के कारण स्वभाव में तीव्रता आ जाएगी।

अनुराधा का द्वितीय चरण—अनुराधा के द्वितीय चरण में चंद्रमा के स्थिर होने पर मनुष्य धर्म कार्यों में लगा रहने वाला होगा। इस पाद का स्वामी बुध है। बुध आप जानते हैं परोपकार और यज्ञीय कर्म करने में विख्यात है। शनि भी अपने वैराग्य में बुध को इस कार्य में सहायता देगा और दोनों (नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र पाद स्वामी) मिलकर मनुष्य को वास्तविक अर्थों में धार्मिक बना देंगे।

अनुराधा का तृतीय चरण—अनुराधा के तृतीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति लंबी आयु भोगने वाला होता है। इस चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र एक शुभ ग्रह है, यह और चंद्र दोनों मिलकर अनुराधा के स्वामी शनि को मानो प्रभावित करेंगे जिसके फलस्वरुप शनि आयुष्य को दीर्घ कर देगा। या इस प्रकार की कह सकते हैं कि शुक्र आयुष्यकारक शनि को भी लाभ पहुंचायेगा और आयुष्य द्योतक चंद्र को भी।

अनुराधा का चतुर्थ चरण—अनुराधा के चतुर्थ चरण में जन्म समय पर चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति नपुंसकता युक्त होता है। इस चरण का स्वामी मंगल है। शनि जो नक्षत्र स्वामी हैं वह नपुंसकता की ओर ले जाए तो ले जा सकता है। परन्तु चरण स्वामी मंगल जो कामपूर्ण तथा सक्रिय ग्रह है वह शनि को इस कार्य में सहायता करेगा अथवा नहीं, यह विषय विचारणीय है।

चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में

ज्येष्ठासु सन्तोषपरतोऽतिकोपी,
न भूरिमित्रो निरतश्च धर्मे।

यदि चंद्रमा जन्म समय में ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म में रत होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र का स्वामी बुध होता है जो कि नैसर्गिक रूप से एक शुभ एवं परम भागवत ग्रह है। विष्णु रूप परोपकारी और धार्मिक है। अतः इस प्रकार के धार्मिक ग्रह के नक्षत्र में आकर मन रूपी चंद्रमा यदि संतोषप्रिय हो जाए तो उपयुक्त ही है। धर्म में सदा लगा रहे यह भी इसीलिए उपयुक्त है। चंद्रमा के लिए चूंकि बुध शत्रु है, अतः अधिक मित्र न हों, ऐसा कहा है। अतिकोपी भी संभवतया इसी शत्रुत्व के कारण कहा, क्योंकि शत्रुत्व और कोप में संबंध है ही।

ज्येष्ठा का प्रथम चरण–ज्येष्ठा के प्रथम चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति क्रूर स्वभाव वाला होता है। नक्षत्र का स्वामी बुध है और नक्षत्र पाद का बृहस्पति। बुध से तो चंद्रमा की कोई मित्रता नहीं। बृहस्पति मित्र अवश्य है, परन्तु इसकी भी मूल त्रिकोण राशि चंद्र की राशि से छठे पड़ती है। अतः शत्रुत्व और क्रूरता का व्यवहार देखने में आ सकता है।

ज्येष्ठा का द्वितीय चरण–ज्येष्ठा के द्वितीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति भोगी होता है। इस पाद का स्वामी शनि है और नक्षत्र का बुध। दोनों मिलकर कुटिल मार्ग पर ले जा सकते हैं।

ज्येष्ठा का तृतीय चरण–ज्येष्ठा के तृतीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो जातक पुत्र से युक्त होता है। इस पाद का स्वामी बृहस्पति है और नक्षत्र का स्वामी बुध। बुध को तो बृहस्पति की बात माननी है, अतः बृहस्पति जो पुत्रकारक है पुत्रदायक सिद्ध हो सकता है।

वृश्चिकलग्न की महिला जातक

वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाली स्त्री लंबे मुख और पेट वाली, पित्त प्रकृति की, पिंगल नेत्रों वाली और अतिशय खर्च करने वाली होती है। यह कुटिल स्वभाव की और धर्म को आडंबर मानने वाली होती है। यही कारण है कि वह अपने पति को विशेष महत्त्व नहीं देती। प्रायः इनके दांत में दर्द रहता है। बृहस्पतिवार इनके सब कार्यों के लिए सर्वोत्तम है। इनकी पीठ पर प्राय तिल होता है। गौर वर्ण की स्त्रियों से सदैव शत्रुता रहती है। इनके चार तक पुत्र और दो कन्याएं होने की संभावना बनी रहती है। अपने जीवन मे तीन बार इसे खतरा बनता है। चौथे और तेरहवें वर्ष में बीमारी का और तीसवें साल में गिरने का। इनकी आयु प्रायः 70 वर्ष के ऊपर जाती है। यह जन्मकुण्डली पर निर्भर है। प्रायः रोग से या दुर्घटना से अथवा ऑपरेशन के बिगड़ने से मौत होती है।

वृश्चिकलग्न के शुभाशुभ फल

- वृश्चिकलग्न के प्रधान ग्रह सूर्य व चंद्र है।
- शुभ ग्रह भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य तथा धनेश पंचमेश बन कर बृहस्पति है।
- पाप ग्रह सप्तमेश द्वादशेश शुक्र और लाभेश अष्टमेश बुध है। परन्तु कुछ लोग शनि भी मानते हैं।
- लग्नेश मंगल षष्ठेश भी है अतः सम है और तृतीयेश चतुर्थेश होने से शनि भी इस कुण्डली का सम ग्रह है।

- इसमें मारक ग्रह शुक्र बनता है।
- राजयोग कारक ग्रह सूर्य व चंद्र हैं।
- यह कुण्डली कालपुरुष के आठवें भाव की राशि की होने से अंडकोष का स्थान लेती है। अत: वृश्चिक राशि का मंगल एवं आठवां भाव या अष्टमेश पाप प्रभावी होगा तो अंडकोष की वृद्धि, बवासीर, भंगदर जैसे रोग संभव हैं।
- यहां लग्न में मंगल स्वगृही होकर **रुचक योग** बनायेगा। साहस से धन प्राप्त होगा।
- लग्न में चंद्र हो तो सुंदर व चतुर पुरुष या पुरुष की कुंडली में सुंदर पत्नी मिलेगी ऐसे हाल में जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
- लग्न में मंगल+चंद्र की युति गले के रोग की संभावना पैदा करेगी।
- वृश्चिकलग्न या राशि में प्राय: स्वभाव उग्र होगा। जातक अपनी मनमानी करने वाला होगा। क्रोध करने वाला पर कर्मठ व हठी होगी। पुरुष या स्त्री सैनिक वृत्ति वाले होंगे। यदि मंगल बली हो तो शत्रु पर विजय पाने वाली होगा।
- इस कुंडली में मंगल+शनि मिलकर जिस भाव में होंगे व जिस भाव को देखेंगे उस भाव का कड़ा विरोध करेंगे पर चरित्र शुद्ध होगा। लग्न का मंगल कुंडली का मांगलिक बनाता है। पर वह हल्का है बुरा फल कम ही करेगा।
- लग्न में शनि कब्जी रोग देगा।
- लग्नस्थ शनि पर मंगल दृष्टि से दूषित हो तो अपघात करता है या कारावास भी बन सकता है।
- लग्नस्थ शुक्र शुभ नहीं होगा। व्यकित व्याभिचारी बनेगा।
- मंगल+शुक्र लग्न में हो, शुभ दृष्ट हो तो जातक चित्रकार, शिल्पी, अभिनेता, गायक बन सकता है।
- लग्न में केवल शुक्र एक ही पति या पत्नी का सुख देता है। सुख अच्छा होगा, अधिक प्रेम रहेगा।
- लग्न में सूर्य या राहु रोगप्रद होंगे इससे कुंडली भौमपंचक दोष वाली होगी।
- वृश्चिकलग्न में मंगल प्रधान राशि षष्ठ स्थान में होती है। अत: मंगल का रत्न नहीं पहनाना चाहिए।

उपाय

- इस कुण्डली वाले को मोती या माणिक्य पहनाना हितकर है।
- सुंदरकांड या हनुमान चालीसा के पाठ फायदे वाले हैं।

- मंगल व्रत हमेशा ही श्रेष्ठ रहेगा। स्त्री हो तो मंगला गौरी व्रत करें अर्थात् मंगल के दिन पार्वती की पूजा कर व्रत करें।
- रविवार व्रत श्रेष्ठ है। इस लग्न के लिए चंद्र बाधक भी है। स्थिर लग्न में नवम भाव भावेश बाधक होता है।

❑❑❑

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3, हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1, हि. 3	चंद्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 3, सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चंद्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चंद्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मी. 3, श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चंद्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3, श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1, मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1, मी. 1, श्वा.2	चंद्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हिरण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3, सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्षा
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1, हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2, मू. 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू, 1 स, 1 मू, 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3, बि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चंद्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि., 3 मी.	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी., 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	[redacted]	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दु,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प, 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प, 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चंद्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भंग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चंद्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृत्तिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चू.	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	गु.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)				8. पुष्य (शनि)				9. आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/3/20/0	4	चं.	हु	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	चं.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	मं.

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी	5/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

13. हस्त (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पो	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (बृहस्पति)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	गु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
भा	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
भी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रवण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	से	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	सा	10/13/20/0	2	श.	सो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	सी	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	सू	10/19/0/04	4	गु.	–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

वृश्चिकलग्न पर अंशात्मक फलादेश

वृश्चिकलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–7/3/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–इन्द्राग्नि
10. वर्णाक्षर–तो
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–चंद्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लगनन क्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलत चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा।

वृश्चिकलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/3/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तो
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–चंद्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलत चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। मंगल मेष राशि के 12 अंशों तक मूलत्रिकोणी रहता है तथा मेष के 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अतः यहां मंगल शुभ फलदायी है।

वृश्चिकलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/3/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तो
11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलतः चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा मेष के 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अतः यहां मंगल अति शुभफल ही देगा।

वृश्चिकलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**—विशाखा
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—7/3/20/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—व्याघ्र
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**—तो
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा

लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलत: चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अत: यहां मंगल की दशा अति शुभफल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–7/3/20/0 से 7/6/40/0

4. वर्ण–विप्र

5. वश्य–कीट

6. योनि–मृग

7. गण–देव

8. नाड़ी–मध्य

9. नक्षत्र देवता–मित्र

10. वर्णाक्षर–ना

11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–मंगल

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी। जबकि शनि की दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी, पराक्रम बढ़ेगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मंगल 12 अंशों तक मूल त्रिकोणी होता है। फलत: मंगल की दशा उन्नतिदायक होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–7/3/20/0 से 7/6/40/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–कीट

6. **योनि**–मृग

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–मित्र

10. **वर्णाक्षर**–ना

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी। जबकि शनि की दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी, पराक्रम बढ़ेगा।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अतः यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा

2. **नक्षत्र पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–7/3/20/0 से 7/6/40/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–कीट

6. **योनि**–मृग

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–मित्र

10. **वर्णाक्षर**–ना

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी। जबकि शनि की दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी, पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अतः यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–7/6/40/0 से 7/10/0/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–कीट

6. **योनि**–मृग

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–मित्र

10. **वर्णाक्षर**–नो

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति हैं। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एवं लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ

फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अंतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों मंगल तक मूलत्रिकोणी कहलाता है। फलत: मंगल की दशा उन्नतिदायक है।

वृश्चिकलग्न, अंश [redacted] से 9

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–7/6/40/0 से 7/10/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–नी
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति हैं। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एवं लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अंतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अत: यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–2

3. **नक्षत्र अंश**—7/6/40/0 से 7/10/0/0

4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—मित्र
10. **वर्णाक्षर**—नी
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति हैं। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एवं लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अंतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अतः लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**—अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—7/10/0/0 से 7/13/20/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—मित्र
10. **वर्णाक्षर**—नू
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र शनि का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलतः शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा तथा भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर '**आरोह अवस्था**' में पूर्ण बली है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने से बलवान है अतः लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–7/10/0/0 से 7/13/20/0
4. **बर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–नू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र मंगल का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलतः शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर '**आरोह अवस्था**' में पूर्ण बली है। मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने से बलवान है। अतः लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–7/10/0/0 से 7/13/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–नू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र मंगल का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलतः शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा तथा भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से '**आरोह अवस्था**' में पूर्ण बली है। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 से 13 अंशों के भीतर होने के कारण पूर्ण बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/13/20/0 से 7/16/40/0

4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—मित्र
10. **वर्णाक्षर**—ने
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य **'आरोह अवस्था'** में पूर्ण बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अन्तरदशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**—अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—मित्र
10. **वर्णाक्षर**—ने
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में मध्य बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–ने
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। परन्तु मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–ने
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों में अवरोह अवस्था है। अतः लग्न मध्बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–7/20/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–नो
11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'क्रूरो'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**—ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—7/20/0/0
4. **वर्ण**—विप्र
5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**—नो
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'क्रूरो'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध

का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा

2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–7/20/0/0

4. वर्ण–विप्र

5. वश्य–कीट

6. योनि–मृग

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–इन्द्र

10. वर्णाक्षर–नो

11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–मंगल

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'क्रूर'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा

2. नक्षत्र पद–2

3. नक्षत्र अंश–7/20/0/0 से 7/23/20/0

4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है। अतः बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध में मंगल का अंतर या मंगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–7/20/0/0 से 7/23/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है। अतः बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध में मंगल का अंतर या मंगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–7/20/0/0 से 7/23/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–इन्द्र
10. वर्णाक्षर–या
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है। अतः बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध में मंगल का अंतर या मंगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13

अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा 2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–7/23/20/0 से 7/26/40/0
4. **वर्ण**–विप्र 5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य 9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यो 11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु परन्तु लग्ननक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है। ऐसे में शनि में बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि में मंगल या मंगल में शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा 2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–7/23/20/0 से 7/26/40/0
4. **वर्ण**–विप्र 5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग 7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यी
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्न मंगल का शत्रु परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है। ऐसे में शनि में बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि में मंगल या मंगल में शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–7/23/20/0 से 7/26/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यी
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका

जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्न मंगल का शत्रु परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है। ऐसे में शनि में बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि में मंगल या मंगल में शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–इन्द्र
10. वर्णाक्षर–यू
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलत: शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। मंगल प्राय 28 अंशों के पास जाता है तो विशेष रुप से शुभ-अशुभ फल देने वाला हो जाता है। मंगल की इस नैसर्गिक विशेषता के कारण यहां लग्न बलवान माना जायेगा। फलत: लग्नेश मंगल की दशा यहां अति शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परमनीच तथा मकर राशि के 28 अंशों में परम उच्च का होता है। अतः 28 अंशों में यहां लग्न एवं मंगल दोनों परम बली ही होगा। इसलिए मंगल की दशा यहां अतिशुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यू
11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न अट्ठाईस से उनतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर '**हीनबली**' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परमनीच तथा मकरराशि के 28 अंशों में परम उच्च का होता है। अतः यहां पूर्ण अंशों में होने के कारण लग्न व मंगल परमबली है। इसलिए मंगल की दशा यहां अतिशुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–कीट

6. **योनि**–मृग

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र

10. **वर्णाक्षर**–यू

11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न उनतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परम नीच तथा मकर राशि के 28 अंशों में परम उच्च का कहलाता है। अतः यहां पूर्ण अंशों में होते हुए भी लग्न परमबली है। इसलिए मंगल की दशा यहां अति शुभ फल देगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और आयुष्य योग

1. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश होकर भी मारक का काम नहीं करेगा। जबकि बुध अष्टमेश होकर मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र व्ययेश होने से सहायक मारकेश है। शनि अशुभ है। आयुष्य प्रदाता ग्रह मंगल है।
2. वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु पाण्डुरोग (पीलिया), गुदा-जन्य रोग, प्रमाद अथवा छोटे भाई द्वारा संभव है।
3. वृश्चिकलग्न वालों की औसत आयु 75 वर्ष 2 माह मानी गई है। जन्म के उपरान्त 2, 6, 9 व 11 माह तथा 2, 3, 6, 8, 13, 16, 20, 23, 29, 32, 35, 38, 42, 45, 52, 65 और 72 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्पमृत्यु संभव है।
4. वृश्चिकलग्न हो तथा मंगल कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।
5. वृश्चिकलग्न में मंगल हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है।
6. वृश्चिकलग्न में मंगल के साथ शनि कुंभ राशि में केन्द्रवर्ती हो तो जातक स्वस्थ सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।
7. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में, बृहस्पति एवं शुक्र द्वारा दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
8. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा छठे मेष का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
9. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
10. वृश्चिकलग्न में मंगल पांचवें मीन का, शनि मेष का और सूर्य सातवें वृष का हो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

11. वृश्चिकलग्न में कुंभ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

12. शनि लग्न में, कुंभ का चंद्र चौथे, मंगल सातवें तथा दशम भाव में स्वगृही सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

13. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध सातवें हो तथा चंद्रमा किसी पाप ग्रह के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

14. वृश्चिकलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल पाप ग्रहों के साथ आठवें स्थान में हो, अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

16. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा मेष या मिथुन राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र मे न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक ही जी पाता है।

17. वृश्चिकलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

18. वृश्चिकलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

19. वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि मिथुन राशि में, किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक नौ वर्ष की आयु तक मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

20. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति मेष का और चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष तक ही जी पाता है।

21. वृश्चिकलग्न में सूर्य द्वादश में, चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे जातक की तत्काल मृत्यु होती है।

22. वृश्चिकलग्न के छठे भाव में सूर्य+मंगल+बृहस्पति+राहु हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

23. वृश्चिकलग्न में द्वादशस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

24. वृश्चिकलग्न में षष्ठस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

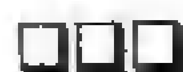
25. वृश्चिकलग्न में नवम भाव स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

26. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

27. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

28. वृश्चिकलग्न में षष्ठेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

29. वृश्चिकलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम भाव में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।



वृश्चिकलग्न और रोग

1. वृश्चिकलग्न में षष्टेश मंगल लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा हो जाता है।
2. वृश्चिकलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तो तथा चतुर्थेश शनि पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. वृश्चिकलग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. वृश्चिकलग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो तथा निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ स्थान में शनि पाप ग्रहों से दृष्ट एवं छठे स्थान में सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. वृश्चिकलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
8. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ स्थान में शनि एवं कुंभ का सूर्य साथ में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. वृश्चिकलग्न में लग्नस्थ सूर्य यदि दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. वृश्चिकलग्न में मंगल+शनि+बुध की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की अकाल मृत्यु वाहन दुर्घटना से होती है।
11. वृश्चिकलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश मंगल बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रोगग्रस्त रहता है।

13. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में हो, लग्नेश मंगल आठवें हो, लग्न पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल चौथे या द्वादश भाव में बुध+शनि के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से ग्रसित रहता है।

15. शनि लग्न में, कुंभ का चंद्र चौथे, मंगल सातवें तथा दशम भाव में स्वगृही सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

16. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध सातवें हो तथा चंद्रमा किसी पाप ग्रह के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. वृश्चिकलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल पाप ग्रहों के साथ आठवें स्थान में हो, अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

19. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा मेष या मिथुन राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक ही जी पाता है।

20. वृश्चिकलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

21. वृश्चिकलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

22. वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि मिथुन राशि में किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक नौ वर्ष की आयु तक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

23. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति मेष का और चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष तक ही जी जाता है।

24. वृश्चिकलग्न में सूर्य द्वादश में, चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे जातक की तत्काल मृत्यु होती है।

25. वृश्चिकलग्न के छठे भाव में सूर्य+मंगल+बृहस्पति+राहु हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

26. वृश्चिकलग्न में द्वादश सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

27. वृश्चिकलग्न में षष्ठस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

28. वृश्चिकलग्न में नवम भाव स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

29. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

30. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. वृश्चिकलग्न में षष्ठेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

32. वृश्चिकलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम भाव में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

❑❑❑